

सोशल मीडिया का युवाओं के जीवन पर प्रभाव का अध्ययन

अमूल्य कुमार सिंह एवं सुरेन्द्र कुमार जायसवाल

<https://doi.org/10.61410/had.v21i3.355>

शोध सारांश

वर्तमान आधुनिक जीवन शैली में सोशल मीडिया डिजिटल युग के रूप में हमारी युवा पीढ़ी के सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाला बड़ा माध्यम बन चुका है। आज का युग इण्टरनेट के दायरे में बँध सा गया है। फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब एवं अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म ने संचार, सम्पर्क, शिक्षा, रोजगार, सामाजिक सहभागिता एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति माध्यम को अधिक गतिशीलता प्रदान की है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारतीय परिवेश में सोशल मीडिया का प्रभाव किस प्रकार युवा पीढ़ी पर पड़ रहा है का अध्ययन करना है। इस अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि सोशल मीडिया ने किस प्रकार युवा पीढ़ी के सामाजिक सम्बन्धों, मित्र-मण्डली, जीवन-शैली के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक सहभागिता को भी प्रभावित करता है।

सोशल मीडिया ने युवाओं के सामाजिक सम्पर्क के क्षेत्र का विस्तार करते हुए भौगोलिक दूरी को कम किया है। विभिन्न क्षेत्रों में जहाँ सोशल मीडिया की उपयोगिता दिखाई पड़ती है इसके माध्यम से अपने विचारों को व्यापक स्तर पर व्यक्त करने तथा विभिन्न सामाजिक शैक्षिक मुद्दों पर सहभागिता भी दिखाई पड़ती है, किन्तु इसका दूसरा पक्ष उत्साहवर्धक नहीं कहा जा सकता है।

प्रमुख शब्द: सोशल मीडिया, युवा, सहभागिता, डिजिटल युग, संचार, सामाजिक जीवन, अभिव्यक्ति।

प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने जो रफ्तार पकड़ी है उसने मानव जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया है। इण्टर नेट और स्मार्ट फोन ने पारम्परिक संचार साधनों को वृद्ध स्तर पर परिवर्तित किया है। सोशल मीडिया मानव जगत की आवश्यक आवश्यकता बन गयी है। यह मनोरंजन मात्र का साधन न होकर सूचनाओं के आदान-प्रदान के साथ सामाजिक सम्बन्धों, शिक्षा, रोजगार के लिए भी महत्वपूर्ण साधन बन चुका है। युवा वर्ग सोशल मीडिया के सबसे सक्रिय उपभोक्ता के रूप में दिखाई पड़ता है।

भारत जैसा विशाल विविधतापूर्ण सर्वाधिक युवा जनसंख्या वाले देश में सोशल मीडिया का प्रभाव देखा जा सकता है। सोशल मीडिया ने युवा वर्ग को स्थानीय सीमाओं से बाहर निकाल वैश्विक दुनिया से जुड़ने का अवसर प्रभी प्रदान किया है। वर्तमान तीव्र संचार युग के परिवेश का युवा गहरे और बहुआयामी पीढ़ीगत संघर्ष का भी सामना कर रहा है। संचार-प्रौद्योगिकी की गतिशीलता आर्थिक चुनौतियों एवं परिवर्तित सामाजिक मूल्यों-मान्यताओं ने पीढ़ीगत अन्तर शायद कुछ अधिक गहरा कर दिया है। आज की युवा पीढ़ी संचार और तकनीकी के आधार पर अधिक सक्षम दिखाई पड़ती है साथ ही वह संचार, मनोरंजन एवं जीवन के विभिन्न पक्षों में संचार-तकनीकी पर पूर्ण रूप से निर्भर होता जा रहा है। वहीं उनके पूर्व की पीढ़ी संचार-साधनों के जाल में अभी उलझी है। नई तकनीक के प्रभाव में जुड़ने तथा उससे तालमेल स्थापित करने में समस्याओं का सामना भी करना पड़ रहा है।

- प्रोफेसर, – समाजशास्त्र विभाग, का0सु0 साकेत0 पी0जी0 कालेज, अयोध्या।
- असि0 प्रोफे0– समाजशास्त्र विभाग, का0सु0 साकेत0 पी0जी0 कालेज, अयोध्या।

वहीं युवा वर्ग आर्थिक अनिश्चित एवं बेरोजगारी का सामना करते हुए भी 'संयम' एवं 'कूल' वाले अंदाज में जीवन-निवर्हन का प्रयास कर रहा है।

सोशल मीडिया का युवाओं के सामाजिक जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव एकांगी नहीं है। इसका नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पक्ष विद्यमान है। सोशल मीडिया को शिक्षा प्राप्त करने, व्यवसाय में उपयोग करने का जहाँ लाभ है, वहीं इसके गलत तरीके से प्रयोग करने पर पारिवारिक, सामाजिक, एवं राष्ट्रीय क्षति भी सम्भव है। अतः यह इसका नकारात्मक पक्ष उजागर करता है। सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास, तकनीकी नवाचार तथा सांस्कृतिक परिवर्तन का वाहक भी है। सोशल मीडिया, परम्परा एवं आधुनिकता के बीच एक ऐसे सामाजिक समूह का प्रतिनिधित्व भी करता है जिसका प्रभाव व्यक्ति और समाज की जीवन शैली में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। नगरीय क्षेत्र के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं में डिजिटल माध्यमों के द्वारा वैश्विक दुनिया से जुड़ गया है। इससे सामाजिक सम्पर्क विस्तार ने युवा वर्ग के समक्ष नवीन विकल्प एवं आकांक्षाओं का अम्बार लगा दिया है।

सोशल मीडिया ने युवाओं के सामाजिक सम्बन्धों की प्रकृति में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है। पहले मित्रता और सामाजिक सम्पर्क मुख्यतः परिवार, पड़ोस, विद्यालय एवं कार्यस्थल जिसे हम समाजीकरण के रूप में जानते हैं जहाँ व्यक्ति सामाजिक व्यवहार सीख कर समाज के अनुकूल बनता है बच्चे समाज के तौर-तरीके, शिष्टाचार, भाषा एवं मान्यताओं को अपनाते हैं जिसे हम समाजीकरण के साधन के रूप में जानते हैं। संचार-माध्यम भी समाज से जोड़ने का माध्यम है।

व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम जैसे संचार मंच हमें मित्रों नातेदारों तथा सहपाठियों को एक साथ जोड़ने का कार्य करता है। इससे सामाजिक सम्बन्धों का भी भौगोलिक विस्तार हुआ है। सोशल मीडिया ने समान रुचि वाले लोगों को जोड़ने की सम्भावना भी बढ़ाई है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों यथा-शिक्षा, खेल, साहित्य, संगीत, रोजगार, कला जैसे विभिन्न विषयों पर अपनी राय व्यक्त करने वाले लोगों के विचारों एवं रुचि को भी सम्मान प्राप्त होता है। सोशल मीडिया सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यावरण संरक्षण, महिला अधिकार, शिक्षा स्वास्थ्य, सामाजिक समानता, आपदा राहत जैसे सार्वजनिक मुद्दों पर भी जानकारी प्राप्त होती है। आज का युवा वर्ग सामाजिक जागरूकता एवं नागरिक सहभागिता को एक माध्यम के रूप में सोशल मीडिया का प्रयोग कर रहा है।

सोशल मीडिया के प्रभाव में क्षेत्र, भाषा एवं संस्कृतियों का एक दूसरे के साथ परिचित होने का मौका मिला है। देश के विभिन्न भोगों की जीवन-संस्कृति, एवं परम्पराओं के विषय में जानकारी तथा इसकी विविधता के प्रति समझ विकसित करने की चाह ने समाज एवं संस्कृति को जानने समझने का एक बड़ा मंच तैयार कर दिया है। वहीं सोशल मीडिया ने जहाँ सकारात्मक मंच प्रदान किया है तो साथ ही इसी मंच से कुछ राष्ट्र विरोधी ताकतें हमेशा साइबर क्राइम, आन-लाइन ठगी के साथ-साथ साइबर बुकिंग, फ्राड एवं समाज के प्रति नकारात्मक भाव, निजी जानकारी साझा करने के नाम पर ठगी जैसे कृत्य भी कर रहे हैं। जिससे इस प्लेटफार्म की संवेदनशीलता पर प्रश्नचिन्ह लग रहा है। जीवन शैली में परिवर्तन, आर्थिक गतिशीलता लोकप्रियता और उपलब्धियों पर भी इसका प्रभाव अवश्य पड़ रहा है।

सोशल मीडिया का अनियंत्रित उपयोग युवाओं के समय-प्रबन्धन को भी प्रभावित कर रहा है। लगातार वीडियो गेम, मनोरंजन सामग्री रील्स, चैटिंग इत्यादि का अधिक उपयोग एकाग्रता में कभी के

साथ अध्ययन की नियमितता को भी प्रभावित करता है। पारिवारिक सम्बन्धों पर भी इसका व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। संवादहीनता ने जन्म ले लिया है घर के सभी सदस्य मोबाइल पर व्यस्त रह रहे हैं। आपस में बातचीत का भी समय नहीं रह रहा है।

सोशल मीडिया के द्वारा युवा वर्ग का सामाजिक जीवन—शैली, फैशन मनोरंजन, भाषा सम्बन्धी व्यवहार को अवश्य प्रभावित किया है। उसकी मनोवृत्ति में तेजी के साथ परिवर्तन देखा जा सकता है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने जिस तरह से युवाओं को ध्यान आकृष्ट किया है उसने आधुनिकता से आगे की दुनिया को इमैजिन करने की शक्ति भी युवाओं में पैदा कर दी है। आज सोशल मीडिया ने युवा शक्ति को नई डिजिटल पहचान प्रदान की है। इसे आत्म-प्रस्तुतिकरण की प्रक्रिया माना जाता है। डिजिटल युग में यह प्रक्रिया सोशल मीडिया के माध्यम से दिखाई पड़ती है।

इस देश के सभी पक्षों में सोशल मीडिया के प्रभाव के देखा जा सकता है चाहे वह सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक हो अथवा भाषाई विविधता के सन्दर्भ में। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी का प्रयोग होता है। सोशल मीडिया ने सामग्री निर्माण में भी वृद्धि की है, आज नगरीय परिवेश के साथ-साथ ग्रामीण परिवेश में भी सोशल मीडिया का प्रभाव तीव्र गति से बढ़ा है। जीवन शैली, चयन पर निर्भर होती है और चयन सूचनाओं तथा सम्पर्क के प्रक्रिया के फल स्वरूप निर्भर करता है। संचार—माध्यम लोगों तक सूचनाओं को पहुँचाने का कार्य करता है। लोग अपनी अर्थपूर्ण सूचनाओं के माध्यम से लोगों की मान्यताओं सोंच, आकाँक्षाओं, चयन और व्यवहार उनकी जीवन शैली के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सोशल मीडिया के सम्बन्ध में लोगों का रुझान एक समान नहीं होता है बल्कि सोशल मीडिया से जिनका लगाव जितना अधिक होगा उतना ही उस पर संचार माध्यमों का भी होगा।

आज के आधुनिक परिवेश में सोशल मीडिया को पूरी तरह से नकारात्मक व्यावहारिक नहीं है। आवश्यकता इसके संतुलित और उत्तरदायित्वपूर्ण उपयोग की है। युवाओं में डिजिटल साक्षरता भी विकसित कि जाना आवश्यक है। उन्हें सूचना की सत्यता जाँचने, साइबर सुरक्षा अपनाने और व्यक्तिगत जानकारी की रक्षा करने के विषय में भी शिक्षित किया जाना चाहिए। परिवार एवं शैक्षिक संस्थानाओं को भी युवाओं को मात्र सोशल मीडिया से दूर रहने की सलाह के बजाय उसके उत्तरदायी उपयोग हेतु प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। उन्हें इसके नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पक्षों को समझने हेतु अलग से शिक्षित करने की आवश्यकता है। इसके लिए वर्कशाप का आयोजन किया जाना चाहिए।

अतः सोशल मीडिया को न तो पूर्णतः सकारात्मक और न ही पूर्ण रूप से नकारात्मक माध्यम माना जा सकता है। इसका प्रभाव उपयोग की प्रकृति, उद्देश्य एवं अवधि हेतु सामाजिक सन्दर्भ पर निर्भर करता है। आज के युवाओं के सामाजिक जीवन को स्वस्थ और संतुलित बनाये रखने में डिजिटल पावर की उपयोगिता सिद्ध करनी होगी साथ ही सामाजिक सम्बन्धों के संतुलन पर भी ध्यान देना आवश्यक है। आज के आधुनिक परिवेश में सोशल मीडिया को समाजीकरण की संस्था के रूप में देखा जाना चाहिए।

संदर्भ सूची :-

1. कास्टेल्स मैनुएल ; द राइज ऑफ द नेटवर्क सोसाइटी, विली ब्लैकवेल ऑक्सफोर्ड-2010
 2. गॉफमैन एर्विंग ; द प्रेजेन्टेशन ऑफ सेल्स इन एवरीडे लाइफ डबलडे न्यूयार्क-1959
 3. युनस्को : ग्लोबल एजुकेशन मानिट्रिंग रिपोर्ट 2023, टेक्नॉलजी इन एजुकेशन युनस्को पेरिस-2023
 4. दुबे, एस0सी0 ; समाज और संस्कृति, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली-2011
 5. श्रीनिवास, एम0एन0 ; आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2000
 6. मदान, गोपाल ; समाजशास्त्र, एस0चाँद एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली-2010
 7. सिंह, अमूल्य कुमार : आधुनिकीकरण में संचार क्रान्ति की भूमिका, श्रद्धा बुल डिस्ट्रीब्यूटर्स फैजाबाद-2015
-